ISSN 2278-554 X Lamahi

लमही

अक्तूबर-दिसम्बर, 2019

हमारा कथा-समय-2

₹50/-

लमही

वर्ष: 12 • अंक: 2 • अक्टूबर–दिसम्बर 2019

इस अंक में

।। विवेचन ।।

विचारधारा, कहानी और समकालीनता —वैभव सिंह 7

।।पड़ताल।।

सहते ही बने, कहते न बनै, मन–ही–मन पीर पिरैबो करै —पंकज पराशर 14
(संदर्भ: इक्कीसवीं सदी का कथा–परिदृश्य)

- ***ज्ञानरंजन :*** ठहरे हुए जीवन का गतिशील चित्र —रोहिणी अग्रवाल 19
- ***दूधनाथ सिंह :*** मृत्यु और जिन्दगी का कथाकार —अखिलेश 25
- ***काशीनाथ सिंह :*** काशीनाथ सिंह कहानी लिखते नहीं, सुनाते हैं —निशांत 30
- ***रवीन्द्र कालिया :*** मध्यवर्गीय संवेदनाओं के कथाकार —डॉ. गौरी त्रिपाठी 35
- ***नीलकान्त :*** साठोत्तर कहानीकार नीलकांत की कहानी–कला और जनपक्षधरता —डॉ. अजीत प्रियदर्शी 39
- ***हिमांशु जोशी :*** मानवीय गरिमा और संघर्ष के स्वरों को व्यक्त करती कहानियां —हरियश राय 44
- ***बल्लभ डोभाल :*** विशिष्ट अभिव्यक्ति के कथाकार —दिवाकर भट्ट 48
- ***विद्यासागर नौटियाल :*** कथाकार का राजनीतिक अनुभव उनकी कहानियों को व्यापकता प्रदान करता है —डॉ. धर्मेन्द्र प्रताप सिंह 50
- ***हरिपाल त्यागी :*** प्रतिरोध इनकी कहानियों का प्रमुख स्वर है —डॉ. एकता कुमारी 53
- ***सुदर्शन नारंग :*** जीवन–यथार्थ और व्यक्ति–मन का विश्लेषण —नेहा चतुर्वेदी 57
- ***पानू खोलिया :*** धुन्ध के पार उजास —शंभु गुप्त 60
- ***रामनारायण शुक्ल :*** रामनारायण शुक्ल की कहानियों का समाज शास्त्र —राम निहाल गुंजन 66
- ***हृदयेश :*** समय से संवाद करती कहानियाँ —प्रदीप कुमार सिंह 69
- ***शानी :*** मध्यवर्गीय बेबसी की दास्तान —पीयूष राज 72
- ***कामतानाथ :*** दूर और देर तक पाठक का पीछा करती कहानियां —बलराम 75
- ***जितेन्द्र भाटिया :*** कत्लगाह में तब्दील होते समाज की कहानियां —सुधीर सुमन 78
- ***योगेश गुप्त :*** बेहतर जीवन की अपेक्षा में रची गईं कहानियाँ —महेश दर्पण 83
- ***प्रकाश बाथम :*** समय की निरंतरता में हस्तक्षेप —प्रताप दीक्षित 86
- ***रवीन्द्र वर्मा :*** कहानी जो कविता की ओर बढ़ रही है —रत्नेश विष्वक्सेन 89
- ***रमेश उपाध्याय :*** जीवन के व्यापक सरोकारों की कहानियां —सूरज पालीवाल 93
- ***असग़र वजाहत :*** विवेक शून्यता के विरोध का कथाकार —पल्लव 98
- ***मंजूर एहतेशाम :*** 'एक खिड़की जो उधर खुलती है, जिधर झांकना आजकल मना है' —पूजा सिंह 103
- ***शंकर :*** बाज़ारवाद और साम्प्रदायिकता का अस्मिता–आख्यान —प्रज्ञा 107
- ***पंकज बिष्ट :*** कहानी के शिल्प में नहीं —प्रमोद कुमार तिवारी 112
- ***स्वयं प्रकाश :*** किस्सागोई के बीच आजादी और अस्मिताबोध के नये मुहावरों की तलाश —अरविन्द कुमार 115
- ***मोहन थपलियाल :*** आत्म–विलगाव के विरुद्ध शोकप्रस्ताव —अच्युतानंद मिश्र 124
- ***संजीव :*** कटखने और निर्मम समय की कहानियां —सूरज पालीवाल 127
- ***शिवमूर्ति :*** कलात्मक सिद्धि की आकांक्षा शिवमूर्ति के साहित्य में एक आंतरिक अंतर्विरोध का निर्माण करती है —अमिताभ राय 132

विद्यासागर नौटियाल

कथाकार का राजनीतिक अनुभव उनकी कहानियों को व्यापकता प्रदान करता है

■ डॉ. धर्मेन्द्र प्रताप सिंह

1949 में 'मूक बलिदान' कहानी के माध्यम से हिन्दी कथा साहित्य में प्रवेश करने वाले विद्यासागर नौटियाल ने नाटक, कहानी, उपन्यास, यात्रा–साहित्य, आत्मवृत्त आदि सभी हिन्दी की प्रमुख विधाओं में लेखन कार्य किया लेकिन हिन्दी जगत में वे अपनी कहानियों और विशेषतः उसमें विद्यमान गढ़वाल की जीवंत लोक–संस्कृति के लिए जाने जाते हैं। विद्यासागर नौटियाल का जन्म 29 सितम्बर 1933 को टिहरी गढ़वाल में हुआ था जो भारतीय इतिहास में बाँध निर्माण के कारण चर्चा में रहा है। टिहरी बाँध निर्माण परियोजना में पूरी–की–पूरी गढ़वाली संस्कृति, वहाँ का लोक–रंग, जीव–जन्तु सभी विकास के नाम पर काल–कलवित हो जाते हैं। रचनाकार का मानस–निर्माण पराधीन भारत में राजा और उनके सामंतों की क्रूर शासन–व्यवस्था के बीच हुआ जो उनके लेखन में परिलक्षित होता है। आजादी के पूर्व गढ़वाल एक रियासत थी और वहाँ राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था लागू थी। नौटियाल जी की कहानियों में चित्रित राजा और सामंतों की तानाशाही से जार–जार होती गढ़वाली जनता की पीड़ा पाठक के अंतर्मन को झकझोर कर रख देती है। टिहरी कथाकार की वह प्रयोगशाला है जिसमें तैयार होकर उनकी कहानियाँ गढ़वाली संस्कृति, भाषा, खान–पान, पहनावा, लोकरंग आदि से पाठक को रूबरू कराती हैं। नौटियाल की कहानियों में एक तत्व समान रूप से दिखाई देता है– भारतमाता ग्रामवासिनी। आजादी के बाद भी हमारे गाँव राजधानी के मुख्य केन्द्र से कटे हुए हैं। यही कारण है कि सुदूर गाँवों में रहने वाले ग्रामीणों को रोजमर्रा की उपयोगी वस्तुएँ नहीं मिल पाती। इसके साथ ही पूँजीपतियों का शोषण, स्त्रियों पर होने वाले अमानवीय व्यवहार, न्याय व्यवस्था, सरकारी अधिकारियों द्वारा अपने कर्तव्य के प्रति उदासीनता, आवागमन और चिकित्सा के साधनों का पूरी तरह अभाव, सरकारी संस्थानों में दलालों का कब्जा, गढ़वाली संस्कृति उनके कथ्य के मूल में समाहित हैं। वे पात्रों का चयन बड़ी ही कुशलता से करते हैं जिसमें उनके राजनीति का अनुभव सहयोग करता है।

विद्यासागर नौटियाल की प्रथम कहानी 'मूक बलिदान' एक दुखान्तकी है जो पाठकों को यह सोचने पर विवश करती है कि पितृसत्तात्मक समाज में एक पुरूष कब तक स्त्री की कराह पर अपनी उन्नति करता रहेगा और स्त्री कब तक स्व की आहुति देती रहेगी। 1951 में लिखी गई यह कहानी कथा नायिका सुबोधिनी, नायक सूर्यमणि, गोबिन्द प्रसाद के माध्यम से बुनी गई है जो पितृसत्तात्मक समाज पर प्रश्नचिन्ह लगाता है– ''मेरा सभी जगह अपमान, पतिगृह में भी और पितृगृह में भी। क्या मेरा कहीं भी अधिकार नहीं, क्या मुझे कहीं भी स्थान नहीं।'' (मेरी कथा यात्रा, पृष्ठ– 269) 'सूर्य का रिजल्ट आया। वह फर्स्ट क्लास में पास हो चुका था। घर में मिठाई बँट रही थी और सास बोल रही थी– दूसरी शादी का प्रबंध करो'– सुबोधिनी की लाश पर सासु माँ के ये शब्द समाज के दहेज लोलुपों के हैं। सुबोधिनी की सास दोनों बड़ी बहुओं की शादी में मिले दहेज (सोने के बर्तन) का हवाला देकर बार–बार उसे मानसिक प्रताड़ना देती है। स्त्री को विवाह के बाद अस्वस्थ्य होने पर न तो मायके में स्थान मिलता है और न ही ससुराल में। सूर्यमणि से उसका विवाह होता है परिवार द्वारा उसे पढ़ाई के बहाने सुबोधिनी से दूर भेजकर बहू को धीरे–धीरे मौत की नींद सुला दिया जाता है। न जाने कितनी सुबोधिनी हमारा दूषित समाज निगल गया लेकिन आज तक इस पर कोई भी पाबंदी नहीं लग सकी।

विद्यासागर नौटियाल